بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail: ansarullah@qadian.in Khulasa Khutba-10.11.2023 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

# बदर की लड़ाई के संदर्भ में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पवित्र जीवन तथा ऐतिहासिक घटनाओं का ईमान वर्धक वर्णन।

# मध्यपूर्व ऐशिया में युद्ध के कारण पुनः विशेष दुआओं की प्रेरणा।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 11 नवम्बर 2023, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللّٰہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत के संदर्भ में बदर के युद्ध के तुरन्त बाद का मैं वर्णन कर रहा था। इस हवाले से दो हिजरी की घटनाओं में एक जन्नतुल बक़ी की स्थापना का वर्णन है। उसका विस्तृत वर्णन इस प्रकार है कि मदीना मुनव्वरा में यहूदी तथा अन्य क़बीलों में सबके अपने अपने कब्रिस्तान थे। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना पहुंचे तो मुसलमानों के लिए अलग कब्रिस्तान की आवश्यकता अनुभव हुई। अतः बक़ीउल ग़र्क़द के कब्रिस्तान को मुसलमानों के लिए चुना गया। बक़ी अर्बी भाषा में ऐसे स्थान को कहते हैं जहाँ वृक्ष अधिक हों। इस कब्रिस्तान को जन्नतुल बक़ी भी कहा जाता है।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ीयल्लाहु अन्हु बयान फ़रमाते हैं कि दो हिजरी में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुसलमानों के लिए एक मक़बरा चुना जिसे जन्नतुल बक़ी कहते हैं। सबसे पहले जो इस मक़बरे में दफ़न हुए वे उसमान बिन मज़ऊन रज़ी. थे। आप रज़ी. अत्यंत नेक एवं बन्दगी करने वाले सूफ़ी की भांति आदमी थे। मुसलमान होने बाद एक बार उन्होने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इस बात की अनुमति चाही कि वे पूर्णतः दुनिया को त्याग कर तथा अपने परिवार से अलग होकर केवल अल्लाह के लिए अपना जीवन समर्पित करना चाहते हैं। आप स. ने फ़रमाया- तुम्हें चाहिए कि ख़ुदा हक़ ख़ुदा को दो, बीवी बच्चों का हक़ बीवी बच्चों को दो, मेहमान का हक़ मेहमान को दो तथा अपन अस्तित्व का हक़ अपन अस्तित्व को दो, क्यूँकि ये सारे हक़ ख़ुदा के द्वारा ही निश्चित किए गए हैं तथा इनको अदा करना इबादत

में दाख़िल है। अर्थात अधिकारों की अदायगी भी इबादत का ही अंश है। अभिप्रायः यह है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसमान बिन मज़ऊन रज़ी. के देहान्त का आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बड़ा दुःख हुआ तथा रिवायत में आता है कि निधन के पश्चात आप स. ने उनके माथे को चूमा तथा उस समय आप स. की आँखों में आँसू थे। उसमान बिन मज़ऊन रज़ी. के निधन का आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बड़ा सदमा हुआ तथा रिवायत के अनुसार आप स. ने उनको चूमा।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अब मैं बनी ग़तफ़ान नामक युद्ध का वर्णन करता हूँ। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह सूचना मिली कि ग़तफ़ान की बनी सअलबा नामक शाखा तथा बनू महारिब मुसलमानों क विरुद्ध एक स्थान पर जमा हो रहे हैं। इस सूचने के मिलने पर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम साढ़े चार सौ सहाबियों के साथ रवाना हुए। रबीउल अव्वल के महीने तीन हिजरी में यह लड़ाई की घटना हुई। मुशरिकों की जत्था बन्दी के विरुद्ध आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रवाना हुए तो रास्ते में बन् ग़तफ़ान का एक व्यक्ति मिला जिसे सहाबियों ने पकड़ कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने पेश किया। उसने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपने क़बीले की गतिविधियों के विषय में अवगत किया। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे इस्लाम की दावत दी तो उसने तुरन्त इस्लाम क़बूल कर लिया। उस व्यक्ति ने आप स. से निवेदन किया कि उसकी क़ौम को जब यह पता चलेगा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा मुसलमानों की सेना उनकी ओर आ रही है तो वे कभी भी आपका मुक़ाबला नहीं करेंगे बल्कि आस पास के पहाड़ों पर चढ़ जाएँगे। अतः जब मुसलमान उनकी ओर बढ़े तो वास्तव में उन्होंने मुक़ाबला नहीं किया अपितु आस पास के पर्वतों पर चढ़ गए। इसी अवसर पर वह प्रसिद्ध घटना घटी कि जब आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक वृक्ष की छाँव में विश्राम कर रहे थे तथा सहाबी अपने कामों में व्यस्त थे तो ऐसे में एक व्यक्ति ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर तलवार उठाई थी। उस व्यक्ति ने पूछा कि ऐ मुहम्मद! अब तुझे मुझसे कौन बचाएगा? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह। तो उसके हाथे से तलवार गिर गई।

उस युद्ध की घटनाओं में से एक घटना हज़रत रुक़य्या रज़ी. का निधन तथा हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ी. की शादी की भी है। रिवायत के अनुसार जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बदर की लड़ाई के लिए रवाना हुए तो हज़रत रुक़य्या रज़ी. बीमार थीं अतएव आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत उसमान रज़ी. से मिले तो उन्हें फ़रमाया कि अल्लाह ने उम्मे कुलसूम रज़ी. का निकाह रुक़य्या जितने महर और उससे तुम्हारे सुन्दर व्यवहार के कारण तुम्हारे साथ कर दिया है। शादो के तीन दिन बाद हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उम्मे कुलसूम के पास तशरीफ़ लाए और पूछा कि ऐ मेरी प्यारी बेटी! तुमने अपने पति को कैसा पाया? इस पर उम्मे कुलसूम रज़ी. ने कहा कि उसमान रज़ी. बेहतरीन पति हैं। हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ी. नौ हिजरी में बीमार होकर वफ़ात पा गई थीं। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ी. के निधन पर फ़रमाया कि यदि मेरी कोई तीसरी बेटी होती तो मैं उसकी शादी भी उसमान रज़ी. से करवा देता।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ी. की शादी का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि रुक़य्या सुपुत्री रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पतनी उसमान बिन अफ़्फ़ान रज़ो. के

निधन पर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी दूसरी बेटी उम्मे कुलसूम रज़ी की शादी जो हज़रत फ़ातमा रज़ी. से बड़ी किन्तु रुक़य्या रज़ी. से छोटी थीं, हज़रत उसमान रज़ी. से कर दी। इसी कारण से हज़रत उसमान रज़ी. को जुन्नूरैन अर्थात दो नूरों वाला कहते हैं। हज़रत उम्मे कुसलूम रज़ी. का निकाह रबीउल अव्वल तीन हिजरी में हुआ था। यह हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ी. की दूसरी शादी थी। इससे पहले हज़रत रुक़य्या रज़ी. तथा हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ी. के निकाह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चाचा अबू लहब के दोनों बेटों के साथ हुए थे परन्तु विदाई से पहले धार्मिक विरोध के कारण ये निकाह टूट गए थे।

इस अवधि की घटनाओं में बनू सलीम नामक युद्ध का भी वर्णन है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सूचना मिली थी कि बनू सलीम की भारी संख्या मुसलमानों के विरुद्ध जमा है। इस पर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीने में अब्दुल्लाह इब्ने उम्मे मकतूम रज़ी. को अपना नायब नियुक्त फ़रमा कर तीन सौ सहाबियों के साथ छः जमादिल ऊला को रवाना हुए। एक रिवायत के अनुसार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर रज़ी. को अपना नायब नियुक्त फ़रमाया था। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलहि वसल्लम को रास्ते में बनू सलीम का एक आदमी मिला जिसने बताया कि बनू सलीम तितर बितर हो गए हैं। सुनिश्चित जानकारी प्राप्त करने पर उस व्यक्ति की सूचना उचित मिली। अतः आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वापस लौट आए तथा युद्ध की स्थिति उत्पन्न न हुई।

एक सिरिय्या (वह युद्ध अभियान जिसमें आप स. शामिल न हों) ज़ैद बिन हारसा है। उसकी विस्तृत जानकरी के अनुसार यह वर्णन मिलता है कि एक दिन सफ़वान बिन उमय्या ने अपने साथियों को कहा कि मुसलमानों ने हमारे व्यवसायिक केन्द्र शाम देश तक जाना बन्द कर दिया है। एक व्यक्ति ने सुझाव दिया कि समुद्र के किनारे वाला मार्ग छोड़ कर ईराक़ के रास्ते से शाम देश जाया जा सकता है। अतएव रास्ते को जानने वाले एक व्यक्ति की सहायता से सफ़वान बिन उमय्या ने रवाना होने का निश्चय किया तथा यात्री दल ने तय्यारी शुरु कर दी। यह सिर्या जमादिल आख़िर तीन हिजरी में पेश आया। यात्रियों की पूरी चेष्टा थी कि किसी तरह यह सूचना मदीने वालों को न पहुंचे परन्तु ख़ुदा की इच्छा कुछ और ही थी। अतएव यह सूचना हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक पहुंच गई। आप स. ने एक सौ घुड़ सवारों को हज़रत ज़ैद बिन हारसा के नेतृत्व में रवाना फ़रमाया। यह हज़रत ज़ैद रज़ी. का पहला सिरिय्या था जिसमें आप रज़ी. अमीर बनकर गए तथा सफल होकर लौटे।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि इन व्यवसायिक यात्री दलों को इस लिए रोका जाता था क्यूँकि इन यात्राओं से होने वाला लाभ स फिर मुसलमानों पर आर्थिक पाबन्दियाँ लगाई जाती थीं। आजकल तो ये देश कई बार अत्याचार करने की भावना से भी पाबन्दियाँ लगाते हैं, इन्होंने इस्लाम पर क्या आपत्ति करनी है।

ख़ुत्बः के दूसरे भाग में हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि इस समय मैं फ़लिस्तीन के लिए दोबारा दुआ की प्रेरणा देना चाहता हूँ। अब कम से कम इतना हुआ है कि कुछ लोग डरते डरते ही सही परन्तु इस अत्याचार क विरुद्ध बोलना शुरु हुए हैं। बल्कि अब तो यहूदियों ने भी इस अत्याचार के विरुद्ध आवाज़ बुलन्द की है तथा अपनी सरकार से कहा है कि क्यूँ हमें भी बदनाम करते हो। अतएव छोटी छोटी आवाज़ें ग़ैरों में उठने लगी हैं, अब कहते हैं कि रोज़ाना चार घन्टे के लिए युद्ध रोका जाए ताकि फ़लिस्तीनियों तक सहायता सामग्री पहुंच

सके। अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है कि इसके अनुसार कितना काम होगा तथा शेष बीस घन्टों में उन्होंने कितनी गोला बारी करनी है। अधिकांशतः बड़े शासन तथा राजनेता भी फ़लिस्तीनियों के जान की हानि को कोई महत्त्व नहीं दे रहे। उनके अपने हित हैं। उन्हें याद रखना चाहिए कि अल्लाह तआला एक सीमा तक ही ढील देता है। फिर यह दुनिया ही नहीं बल्कि अगला जहान भी है, इस दुनिया में भी पकड़ हो सकती है तथा अगले जहान में भी अवश्य पकड़ होगी। अतएव हमें पीड़ित फ़लिस्तीनियों के लिए बहुत दुआ करनी चाहिए। अल्लाह तआला उन्हें इन अत्याचारों से मुक्ति दे। आमीन

ख़ुत्बः के अन्त में हुज़ूरे अनवर ने निम्नलिखित दो जनाज़े ग़ायब पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई।

1- मुकर्रमा मंसूरा बासमा साहिबा पतनी मुकर्रम हमीदुर्रहमान ख़ान साहब जो हज़रत नवाब अब्दुल्लाह ख़ान साहब रज़ी. तथा हज़रत साहिबज़ादी अमतुल हफ़ीज़ बेगम साहिबा रज़ी. की पोती और हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा शरीफ़ अहमद साहब रज़ी. और हज़रत बू ज़ैनब बेगम साहिबा रज़ी. की नवासी थीं। मरहूमा मियाँ अब्बास अहमद ख़ान साहब और अमतुल बारी बेगम साहिबा की बेटी थीं। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमुल्लाह ने उनके निकाह के अवसर पर उपदेश देते हुए फ़रमाया था कि निकाह के अवसर पर पढ़ी जाने वाली आयतों में يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ के शब्दों के साथ रब का तक़्वा धारण करने का आग्रह किया गया है, यह इस ओर संकेत है कि जैसे ख़ुदा तुम्हारा पालन पोषण करने वाला है वैसे ही अब तुम पर भी ऐसा दायित्व पड़ने वाला है कि जिसको अदा करने के लिए आवश्यक है कि तुम भी पालन पोषण की भावना के साथ अल्लाह का तक़्वा धारण करो। मरहूमा ख़ुदा का आभार प्रकट करने वाली, सत्य का पालन करने वाली, सौम व सलात को पाबन्द, ख़िलाफ़त का अत्यंत आदर करने वाली महिला थीं। अल्लाह तआला इनसे मग़फ़िरत तथा दया का सलूक फ़रमाए तथा इनके बच्चों को भी इनकी नेकियाँ जारी रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

2- चौधरी रशीद अहमद साहब पूर्व रजिस्ट्रार कृषि विश्वविद्यालय फैसलाबाद। हुज़ूरे अनवर ने इनके सद्गुण बयान करके फ़रमाया कि अल्लाह तआला इनसे मग़फ़िरत तथा रहम का सलूक फ़रमाए और इनके बच्चों को भी इनकी नेकियाँ जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

**हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652**

**टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131**